भारत की प्राकृतिक वनस्पति

- बिना मानवीय हस्तक्षेप के उगने वाले वनस्पतियों के समूह को प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं।
- इसके विकास में जलवायु, उच्चावच, मिट्टी, ढाल, तटीय स्थिति का स्थिर प्रभाव पड़ता है।
- ग्रीफिथ के अनुसार उपर्युक्त कारकों में सर्वाधिक प्रभाव जलवायु का पड़ता है इसलिए उन्होंने कहा कि जलवायु वनस्पति का सूचकांक होता है।
- प्राकृतिक वनस्पति में पुनर्नवीनीकरण का गुण पाया जाता है।
- भारत में लगभग 30000 प्रकार के वनस्पति पाये जाते हैं जिन्हें 6 वर्गों में बाँटकर अध्ययन करते हैं।

1. उष्ण-आर्द्र सदाबहार वनस्पति
2. उष्ण-आर्द्र मानसूनी वनस्पति
3. उष्ण-शुष्क वनस्पति
4. ज्वारीय वनस्पति
5. उपोष्ण पर्वतीय वनस्पति
6. हिमालय प्रदेश की वनस्पति

1. उष्ण-आर्द्र सदाबहार वनस्पति

विशेषता

1. वनस्पतियों की लम्बाई बहुत अधिक 30-60 m. तक
2. इनके जड़े बहुत गहराई तक नहीं पहुँच पाती हैं क्योंकि धरातल पर ही इन्हें पर्याप्त वर्षाजल प्राप्त हो जाती है।
3. वृक्षों में शाखाएँ कम पायी जाती हैं — वितान कम चौड़ा
4. तना काफी मोटा
5. पत्तियाँ चौड़ी
6. पौधों के ऊपर बड़े पैमाने पर अधिपादप पाये जाते हैं।
7. वृक्ष सालों भर हरे भरे
8. सिनकोना, महोगनी, आयरनवुड, एबोनी, नारियल, बेंत, ताड़.

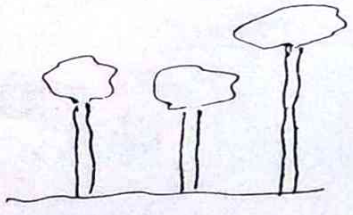

जलवायु —
1. सालों भर वर्षा - 130-250 cm.
2. तापमान अति उच्च 22°-27°C
3. वायुमंडलीय आर्द्रता 70%
4. तापांतर 10°C

वितरण — भारत के कुल वनीय क्षेत्र का 49% भूभाग पर
- (i) अंडमान व निकोबार
- (ii) मालाबार व कोंकण तट
- (iii) उ० पू० भारत

महत्व → 1. प्रतिकूल जलवायु के कारण संसाधनात्मक महत्व कम

2. ईंधन

3. पर्यावरण के लिए अनुकूल

2. उष्ण आर्द्र मानसूनी वनस्पति

विशेषता 1. भारत के मानसूनी जलवायु क्षेत्र में उगने वाली वनस्पति

2. वर्ष में एक बार पत्तियाँ गिराती है

3. वितान चौड़ा

4. तना मोटा

5. शीशम, सागवान, पीपल, महुआ, अमलतास, इमली, सेमल, बरगद आदि

6 पत्तियों की चौड़ाई सामान्य

7. वृक्षों के छाल काफी मोटा

जलवायु — 1. मानसूनी जलवायु का क्षेत्र

2. तापमान 18°C — 35°C

3. वर्षा — 60 — 150 cm.

4. नवम्बर से मई माह तक मौसम शुष्क

वितरण — गंगा का मैदान, शिवालिक पर्वतीय क्षेत्र, असम का मैदान, कोयम्बटूर का पठार, मध्यवर्ती भारत

· भारत में सबसे अधिक क्षेत्रफल पर विस्तृत

महत्व — 1. आर्थिक दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण वनस्पति

2. शीशम, सागवान — भवन निर्माण, फर्नीचर, रेलवे स्लीपर, नाव निर्माण

3. कर्नाटक & TN — सदाबहार जंगल — चंदन → श्रृंगार वस्तु का निर्माण

4. बाँस, सबई घास — कागज

5. खैर — कत्था, तेंदुआ पत्ता — बीड़ी, महुआ — शराब

6. बेर, पलाश, बकुल, पीपल, शहतूत — रेशम के कीड़े पालन

7 झारखंड में लाह के कीड़े — (लैसीफरलाइका)

3. उष्ण शुष्क वनस्पति

विशेषता

- शुष्क जलवायु प्रदेश में उगने वाले वनस्पति को उष्ण शुष्क वनस्पति कहते हैं

(i) अर्द्ध शुष्क वनस्पति — घास, झाड़ी बड़े पैमाने पर, खेजड़ी

- झाड़ियों की लम्बाई 6-9 मी० तक होती है

(ii) पूर्ण शुष्क वनस्पति — कैक्टस, बबूल, खजूर, नागफनी

- पौधा जल ग्रहण करने हेतु जड़ें काफी लम्बी होती है।

- पत्तियाँ काँटों में रूपांतरित हो जाते हैं।

जलवायु - 50 - 100 cm वर्षा - अर्द्ध शुष्क वनस्पति
50 cm से कम —— शुष्क वनस्पति
- तापमान एवं वाष्पोत्सर्जन की क्रिया अधिक

वितरण - अरावली पर्वत के पूर्वी भाग, द० भारत के वृष्टिछाया प्रदेश
लेह - लद्दाख - अर्द्धशुष्क वनस्पति
थार मरुस्थल - पूर्ण शुष्क वनस्पति

महत्व - नागफनी से औषधी, खजूर से चीनी, कम आर्थिक महत्व
मरुस्थलीकरण को रोकने में, सजावट में

4. ज्वारीय वनस्पति

- इसे गरान या मैंग्रोव वनस्पति भी कहा जाता है।
- सुंदरी, कैन, बेंत
- लकड़ी काफी मुलायम
- ताड़, नारियल -
- तना से रेशा को प्राप्त
- इनके जड़ धरातल के ऊपर आ जाते हैं ताकि श्वसन क्रिया आसानी से कर सके

वितरण - नदियों के मुहाने, ज्वारनदमुख, संकरी खाड़ी, क्रीक
- गंगा ब्रह्मपुत्र डेल्टा - मैंग्रोव वनस्पति
- महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी - डेल्टा
- रण ऑफ कच्छ, पूर्वी घाट ताड़, प० घाट नारियल

महत्व - सुंदरी - ईंधन
कैन, बेंत - फर्नीचर, नारियल - गरी, कॉयर (रस्सा), ताड़ से पामऑयल

5. उपोष्ण पर्वतीय वनस्पति

- इस प्रकार की वनस्पति उष्ण एवं उष्ण वाले प्रदेशों के ऊँचाई वाले स्थानों पर पायी जाती है।

(i) आर्द्र उपोष्ण वनस्पति - 1070 मी० - 1525 मी० ऊँचाई पर
(ii) आर्द्र शीतोष्ण वनस्पति — 1525 मी० से ऊँचे स्थानों पर
- ऐसे वनस्पति को सोलास / शोला वन के नाम से जानते हैं।
- ऊँचाई बढ़ने के साथ लकड़ी मुलायम व पत्तियों की चौड़ाई कम होते जाती है।
- चेस्टनट, रोजवुड, यूकेलिप्टस, देवदार, पाइन, चीड़.

वितरण - अरावली, सतपुड़ा, विंध्यन, पूर्वी घाट, प० घाट, अजंता, नीलगिरी, अन्नामलाई पर्वत पर

महत्व - उपयोगी वनस्पति
- पर्वतीय वातावरण के कारण पर्याप्त दोहन संभव नहीं

6. हिमालय पर्वतीय वनस्पति

- हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में बढ़ते ऊँचाई के कारण तापमान में संशोधन होने से विभिन्न ऊँचाईयों भिन्न-भिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पायी जाती हैं।
— प० हिमालय एवं पूर्वी हिमालय में पाये जाने वाले प्राकृतिक वनस्पति

पूर्वी हिमालय	प० हिमालय
1. विषुवत रेखा से नजदीक	1. विषुवत रेखा से दूर
2. वर्षा अधिक प्राप्त	2. वर्षा कम प्राप्त
3. शिवालिक का अभाव	3. शिवालिक उपस्थित

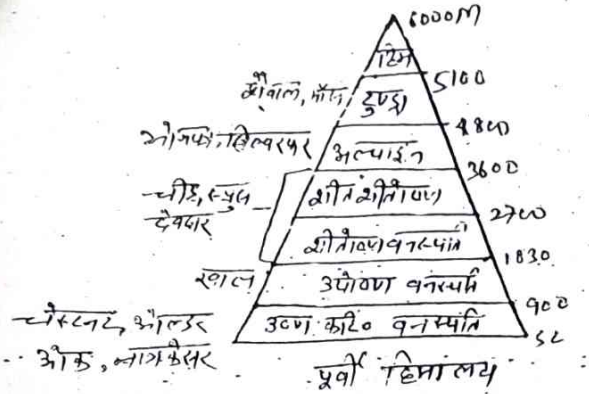

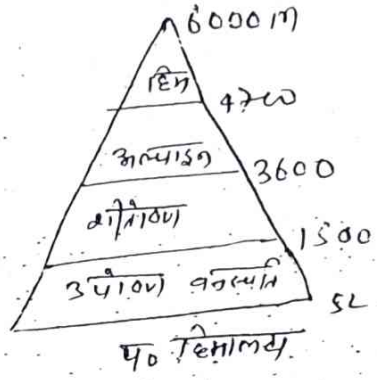

महान हिमालय के द० ढाल पर J&K — सोनमर्ग, गुलमर्ग - घास के मैदान
UK — बुग्याल, पैयार

- कश्मीर हिमालय — अंगूर, अंजीर, अखरोट, चेरी, केसर — व्यावसायिक फसल उत्पादन
अरुणाचल प्रदेश पर्वतीय ढालों पर — अन्नास
असम के पर्वतीय ढालों पर — चाय

महत्त्व — जड़ी बूटी, मुलायम लकड़ी —
- फर्नीचर, ईंधन, खेल, सजावट के सामान, रेजिन के साधन।
- परिवहन साधन के अभाव के कारण दोहन संभव नहीं।
- हिमस्खलन, भूस्खलन।

भारत
प्राकृतिक वनस्पति